ESSENCE - International Journal for Environmental Rehabilitation and Conservation

Volume V: No. 2 2014 [84 – 86] [ISSN 0975 - 6272]

[www.essence-journal.com]

Proceedings of National Conference

"Environmental Conservation and Clean India Programme" December 2014, India

पर्यावरण ओर छायावादी काव्य

Neha Sharma

Received: October 17, 2014 | **Accepted**: December 06, 2014 | **Online**: December 31, 2014

पर्यावरण का अभिप्राय उस वातावरण से है, जो हमारे चारों ओर फैला हुआ है। यह चारों ओर का वातावरण प्राकृतिक दशाओं का एक मिला–जुला रूप है। पर्यावरण प्रकृति के जैव तत्वों, पेड़–पौधों व जीव–जन्तुओं के साथ–साथ अजैव तत्वों – सौर ऊर्जा, प्रकाश, जल, मिट्टी, शैल खनिज और धरातल आदि से विकसित हुआ है। भूमि, जल व वायु पर्यावरण बनाते है। संक्षेप में पर्यावरण प्राकृतिक वातावरण का द्योतक है।

हिन्दी साहित्य के छायावादी कवियों प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा और भगवती चरण वर्मा आदि ने पर्याप्त रूप में प्रकृति के माध्यम से पर्यावरण का चित्रण किया है। उन्होंने एक ओर प्रकृति के मोहक, मधुर और नैसर्गिक रूप का दिग्दर्शन कराया है तो दूसरी ओर भयंकर, विनाशकारी तथा हृदय विदारक रूपों को भी उपस्थित किया है। आदिकाल से जो प्रकृति मानव की सहचरी रही है, अपने विकराल रूप में मानव के विनाश का कारण भी बनी है। आज समूचा विश्व पर्यावरण असन्तुलन के संकट से जूझ रहा हैं। इस संकट की घडी में हमें अधिक जागरूक होना पडेगा। प्रकृति के साथ की गयी छेड़छाड़ उचित नहीं है। अधिक से अधिक पेड़ लगाना और नदियों के पानी को दूषित न करना जन–जन का कर्त्तव्य है। आज मात्र पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों, संगठनों और समितियों से काम नहीं चलेगा, वरन् जन–जन को इसके प्रति जागरूक होना होगा।

पर्यावरण शब्द परि+आवरण के योग से बना है। परि का अर्थ है– चारों ओर का तथा आवरण का अर्थ है– ढकना, बाडा, अहाता, चहारदीवारी आदि। अर्थ हुआ– पृथ्वी के चारों ओर का बाडा। सामान्य रूप से पर्यावरण का अभिप्राय उस वातावरण से है, जो हमारे चारों ओर फैला हुआ है। यह चारों ओर का वातावरण प्राकृतिक दशाओं का एक मिला–जुला रूप है। पर्यावरण प्रकृति के जैव तत्वों, पेड़–पौधों व जीव–जन्तुओं के साथ अजैव तत्वों– सौर ऊर्जा, प्रकाश, जल, मिट्टी, शैल (पर्वत) खनिज और धरातल आदि से विकसित हुआ है। भूमि, जल व वायु भौतिक पर्यावरण (Biological or organic environment) बनाते है। भौतिक पर्यावरण पर ही जैविक पर्यावरण निर्भर करता है और जैविक

For correspondence:

Department of Hindi, J.V. Jain College, Saharanpur, India

पर्यावरण पृथ्वी पर मानव को जीवन प्रदान करने के लिए भोजन व अन्य सामग्री प्रदान करता है। अतः सभी तत्व अन्योन्याश्रित हैं। इससे स्पष्ट है कि यें सभी प्रकृति प्रदत्त शक्तियां मिल–जुल कर प्राकृतिक वातावरण अर्थात् पर्यावरण तैयार करती है। संक्षेप में पर्यावरण प्राकृतिक वातावरण का द्योतक है।

पर्यावरण का परिवर्तन प्रकृति की एक सतत प्रक्रिया है, जो जीवधारियों के विकास और विनाश का कारण बनती है। आज पर्यावरण के विभिन्न घटकों, जल, वायु, मिट्टी और जैव सम्पदा के अवनयन से उत्पन्न असन्तुलन के कारण मानव जीवन अनेक आपदाओं का शिकार हो रहा है। वायु प्रदूषण के कारण अनेक रोग अपना विस्तार कर रहें है जैसे दमा, खाँसी, एलर्जी व कैंसर आदि। औद्योगिक विकास और नगरीय सीवेज के कारण जल प्रदूषण की समस्या गम्भीर रूप धारण कर रही है। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर वनों पर जैविक दबाव में अत्यधिक वृद्धि हो रही है, वनों के विनाश के कारण सूखा एवं बाढ की विभीषिका प्रजातियॉ विलुप्त होने का खतरा निरन्तर बना हुआ है। इतना ही नही आज खेतों और वनों को काटकर तेजी से नगरों का विस्तार, मिलों और कारखानों का निर्माण और यान्त्रिक आविष्कार मनुष्य की बढती महत्वाकांक्षा तथा प्रकृति के साथ छेड–छाड की कहानी कह रहे है।

हिन्दी साहिन्य के छायावादी कवियों ने पर्याप्त रूप में पर्यावरण का चित्रण किया है। उन्होंने कही मनमोहक रूप में पर्यावरण का दिग्दर्शन कराया है तो कहीं भयंकर रूप में। छायावादी के कवि चतुष्ट्य प्रसाद, पन्त, निराला और पहादेवी वर्मा सभी ने इस दिशा में अपनी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का परिचय दिया है। कविवर प्रसाद अपनी अमरकृति 'कामायनी' में सन्ध्या, घनमाला, शैल श्रेणियों और तुषार का वर्णन करते हुए कहते है–

सन्ध्या घनमाला की सुन्दर,

ओढे रंग बिरंगी छींट।

गगन चुम्बिनी शैल श्रेणियॉ,

पहने हुए तुषार किरीट्।। (आशा सर्ग, पृ0 50)

इसी प्रकार पन्त पावस ऋतु के माध्यम से पर्वत प्रदेश और परिवर्तित प्रकृति–वेश का उल्लेख करते है–

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश

पल–पल परिवर्तित प्रकृति–वेश

मेखलाकार पर्वत अपार

अपने सहस्र दृग–सुमन फाड़

अवलोक रहा है बार–बार। (पल्लव, 'उच्छवास' कविता,पृ06)

कवि निराला शिशिर समीर का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं–

बह चली अब अलि शिशिर–समीर

वन देवी के ह्रदय–हार से

हीरक झरते हरसिंगार के। (गीतिका, पृ.20)

महादेवी वर्मा 'हिमालय' की महानता के सन्दर्भ में स्वर्ण रश्मि, इन्द्रधनुष तथा परिमल की विशेषताएं बताती हैं–

हे चिर महान्।

यह स्वर्ण रश्मि छू श्वेत–भाल,

बरसा जाती रंगीन हास,

सेली बनता है इन्द्रधनुष,

परिमल मल–मल जाता बतास। (सन्धिनी, पृ. 117)

छायावादी कवियों ने पर्यावरण रूप में एक ओर प्रकृति के कोमल और मधुर चित्र उपस्थित किए है

तो दूसरी ओर भीषण प्रलयकालीन वातावरण को भी सजीव रूप दिया है। कवि प्रसाद ने कामायनी में प्रकृति के प्रकोप का इस प्रकार उद्‌घाटन किया है–

हाहाकार हुआ क्रन्दनमय

कठिन कुलिश होते थे चूर,

हुए दिगन्त बधिर, भीषण रव,

बार–बार होता था क्रूर।

दिग्दाहों से धूम उठे, या

जलधर उठे क्षितिज तट के,

सघन गगन में भीम प्रकम्पन

झंझा के चलते झटके। (चिन्ता सर्ग पृ0 13)

कवि पन्त ने बादलों की भयानकता द्वारा प्रकृति–प्रकोप का चित्र दर्शाया हैं। जब बादल भूतों की सी भयावनी आकृति बनाकर कड़क–कड़क कर अदृहास करते है तो सम्पूर्ण संसार दहल उठता है–

कभी अचानक भूतों का सा

प्रकटा विकट महा आकार

कड़क–कड़क जब हँसते हम सब

थर्रा उठता है संसार (पल्लव,पृ0 77)

महादेवी वर्मा भी ऐसे ही दृश्य का उल्लेख करती हैं–

घोर तम छाया चारों ओर,

घटाएँ घिर आई घनघोर।

वेग मारूत का है प्रतिकूल,

हिल जाते है पर्वत मूल,

गरजता सागर बारम्बार। (यामा, पृ018)

प्रकृति का प्रकोप जन–जन के हृदय में भय के साथ निराशा का संचार करने वाला है। निराला के शब्दों में –

शिशिर की शर्बरी,

हिंस्र पशुओं भरी।

ऐसी दशा विश्व की विमल लोचनों

देखी जगा त्रास, हृदय संकोचनों

काँपा कि नाची निराशा दिगम्बरी। (राग–विराग,पृ0175)

इस सबसे स्पष्ट होता है कि आदिकाल से ही जो प्रकृति मानव की सहचरी रही है, अपने विकराल रूप में मानव के विनाश का कारण भी बन जाती है। आज समूचा विश्व पर्यावरण असन्तुलन के संकट से जूझ रहा है। इस संकट की घड़ी में हमें अधिक जागरूक होना होगा।

प्रकृति के साथ की गयी छेड़छाड़ उचित नहीं। प्रकृति का नैसर्गिक विकास ही उत्थान का द्योतक है, जबकि कृत्रिम विकास विनाश का निमन्त्रण है। अधिक से अधिक पेड़ लगाना और नदियों के पानी को दूषित न करना जन–जन का कर्त्तव्य है। नदियों के प्रति भक्ति भाव होते हुए भी तमाम औद्योगिक कचरा व विषैला रसायन व अनेक प्रकार की गन्दगी नदियों में ही फेंकी जाती है। धार्मिक अन्धविश्वास, स्नान तथा अस्थि विसर्जन भी उद्योगों के साथ–साथ नदियों के प्रदूषण के कारण बन रहे हैं। वास्तव में नदियां औद्योगिक संस्कृति की प्रमुख देन 'गन्दगी' की उपवाहक बन गयी है। आज मात्र पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों, संगठनों और समितियों से काम नहीं चलेगा, वरन् जन–जन को इसके प्रति जागरूक होना होगा।